नामांक Roll No.

No. of Questions — 14

VU—21—Hindi Sah.

No. of Printed Pages — 7

वरिष्ठ उपाध्याय परीक्षा, 2013

हिन्दी साहित्य

(Hindi Sahitya)

समय : $3\frac{1}{4}$ घण्टे

पूर्णांक : 80

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :

(1) परीक्षार्थी सर्वप्रथम प्रश्न-पत्र पर नामांक अनिवार्यत: लिखें ।

(2) **सभी** प्रश्न हल करने अनिवार्य हैं ।

(3) प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका में ही लिखें ।

(4) जिन प्रश्नों में आंतरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें ।

(5) उत्तर यथासम्भव निर्धारित शब्द-सीमा में ही सुपाठ्य लिखें ।

खण्ड - अ

1. निम्न पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(उत्तर सीमा 20 से 40 शब्द तक)

मैं तो पंथी बाधाओं का
संघर्षों की राह का,
घने तिमिर में नई किरण का
एक मधुर विश्वास हूँ ।

जन्मा, जब मानव ने सोची
बात नये निर्माण की,
बढ़ा, बढ़ी ज्यों-ज्यों सुख-लिप्सा
वैभव की उत्थान की,

मैं रहता हूँ रक्त, स्वेद से
मनमोहक शृंगार कर,
चलता हूँ मैं तूफानों में,
नित दहके अंगार पर,

मझधारा के मतवाले
यौवन से मेरी प्रीत है —
लहर-लहर के उर में तट से
मिलने का उल्लास हूँ ।
घने तिमिर में नई किरण का
एक मधुर विश्वास हूँ ।

(क) संघर्षों की राह का पथिक किन वस्तुओं से अपना शृंगार करता है ? 1

(ख) 'लिप्सा एवं स्वेद' शब्दों के अर्थ लिखिए । 1

(ग) 'घने तिमिर में नई किरण का एक मधुर विश्वास हूँ ।' पंक्ति के भाव-सौन्दर्य को स्पष्ट कीजिए । 2

(घ) काव्यांश में किससे प्रीत का वर्णन किया गया है ? 2

(ङ) 'तूफानों एवं दहके अंगार पर चलने' से क्या तात्पर्य है ? 2

2. निम्न गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(उत्तर सीमा 20 से 40 शब्द तक)

जिस विद्यार्थी ने समय की कीमत समझ ली, वह सफलता को अवश्य प्राप्त करता है । प्रत्येक विद्यार्थी को अपनी दिनचर्या का समय-सारिणी अथवा तालिका बनाकर उसका पूरी दृढ़ता से पालन करना चाहिए ।

जिस विद्यार्थी ने समय का सही उपयोग करना सीख लिया, उसके लिए कोई भी कार्य असंभव नहीं है । कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो किसी कार्य के पूरा न होने पर समय की दुहाई दिया करते हैं । वास्तव में सच्चाई इसके विपरीत होती है । अपनी अकर्मण्यता और आलस्य को वे समय की कमी के बहाने छिपाते हैं । कुछ लोगों को अकर्मण्य रहकर समय की कमी का बहाना बताना अच्छा लगता है । ऐसे लोग केवल बातूनी होते हैं । दुनिया के सफलतम व्यक्तियों ने सदैव व्यस्तता में जीवन बिताया है । उनकी सफलता का रहस्य समय का सदुपयोग रहा है । दुनिया में अथवा प्रकृति में हर वस्तु का समय निश्चित है । समय बीत जाने पर कार्य फलदायक नहीं रहता । सूरज यदि समय पर उदय होना व अस्त होना बंद कर दे, वर्षा यदि समय पर न हो, किसान समय पर अनाज न बोए तो कैसी स्थिति हो जाएगी ? ठीक इसी प्रकार यदि विद्यार्थी समय की कीमत नहीं समझेगा तो वह सफलता प्राप्त नहीं कर सकता । केवल परीक्षा के समय ही विद्यार्थी परिश्रम करेगा और शेष दिन आराम करेगा तो उसे वांछित सफलता नहीं मिल सकती ।

(क) गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए । 1

(ख) 'अकर्मण्य' शब्द का अर्थ स्पष्ट करते हुए वाक्य में प्रयोग कीजिए । 2

(ग) दुनिया के सफलतम व्यक्तियों की जीवन-शैली की विशेषता लिखिए । 2

(घ) 'दिनचर्या' बनाकर उसके अनुसार कार्य करने के क्या-क्या लाभ हो सकते हैं ? लिखिए । 2

(ङ) 'समय बीत जाने पर कार्य फलदायक नहीं होता' इस अर्थ को व्यक्त करने वाली एक कहावत लिखिए । 1

खण्ड - ब

3. किसी **एक** विषय पर लगभग 450 शब्दों में निबंध लिखिए : 8

(i) शिक्षा का उद्देश्य : व्यक्ति निर्माण एवं चरित्र निर्माण

(ii) हिन्दी भाषा राष्ट्र की अस्मिता की अभिव्यक्ति है

(iii) सूचना का अधिकार : लाभ व सीमाएँ

(iv) राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका ।

4. प्रधानाचार्य, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, शिवनगर की ओर से जिला शिक्षा अधिकारी, मुरैना को विद्यालय में रिक्त चल रहे विज्ञान एवं अंग्रेजी विषय के शिक्षकों की वैकल्पिक व्यवस्था करने हेतु कार्यालयी पत्र लिखिए । 4

अथवा

आयुक्त, नगर परिषद् , रामनगर की ओर से 'प्रशासन शहरों के संग' अभियान के अन्तर्गत आयोज्य शिविर एवं किए जाने वाले कार्यों की पूर्ण जानकारी आमजन तक पहुँचाने हेतु एक प्रेस विज्ञप्ति का प्रारूप लिखिए ।

5. निम्न प्रश्नों के उत्तर लगभग 20 - 25 शब्दों में लिखिए :

(क) समाचार लेखन में 'इण्ट्रो' से क्या आशय है ? 1

(ख) संपादकीय लेख एवं फीचर के अन्तर को स्पष्ट कीजिए । 1

(ग) 'स्तंभ लेखन' किसे कहते हैं ? 1

(घ) हिन्दी नेट संसार का संक्षिप्त परिचय दीजिए । 1

6. कहानी के बुनियादी तत्त्वों को लिखते हुए क्लाइमेक्स को स्पष्ट कीजिए ।

(उत्तर सीमा लगभग 120 शब्द) 4

खण्ड - स

7. निम्न पद्यांशों में से किसी **एक** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 7

(उत्तर सीमा लगभग 120 शब्द)

यदि हम किसी तरह युधिष्ठिर जैसा संकल्प पा जाते हैं
तो एक दिन पता नहीं क्या सोचकर रुक ही जाता है सत्य
लेकिन पलटकर सिर्फ खड़ा ही रहता है वह दृढ़ निश्चयी
अपनी कहीं और देखती दृष्टि से हमारी आँखों में देखता हुआ
अंतिम बार देखता-सा लगता है वह हमें
और उसमें से उसी का हलका सा प्रकाश जैसा आकार
समा जाता है हममें ।

अथवा

राघौ ! एक बार फिरि आवौ ।
ए बर बाजि बिलोकि आपने बहुरो बनहिं सिधावौ ॥
जे पय प्याइ पोखि कर-पंकज वार वार चुचुकारे ।
क्यों जीवहिं, मेरे राम लाडिले ! ते अब निपट बिसारे ॥
भरत सौगुनी सार करत हैं अति प्रिय जानि तिहारे ।
तदपि दिनहिं दिन होत झाँवरे मनहुँ कमल हिममारे ॥
सुनहु पथिक ! जो राम मिलहिं बन कहियो मातु संदेशो ।
तुलसी मोहिं और सबहिन ते इन्हको बड़ो अंदेसो ॥

8. निम्न प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 - 50 शब्दों में लिखिए :

(क) वह लता वहीं की, जहाँ कली
तू खिली, स्नेह से हिली, पली,
अंत भी उसी गोद में शरण
ली, मूँदे दृग वर महामरण
पंक्तियों में निहित भाव-सौन्दर्य लिखिए । 2

(ख) अघ ओघ की बेरी कटी विकटी निकटी प्रकटी गुरु ज्ञान-गटी ।
चहुँ ओरनि नाचति मुक्तिनटी गुन धूरजटी वन पंचबटी ॥
उक्त पंक्तियों के शिल्प-सौन्दर्य को लिखिए । 2

9. निम्न प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 - 50 शब्दों में लिखिए :

(क) 'यह दीप अकेला' कविता में व्यष्टि एवं समष्टि के संतुलन को आवश्यक माना गया है । क्यों ? स्पष्ट करें । 2

(ख) तोड़ो तोड़ो तोड़ो

ये ऊसर बंजर तोड़ो

ये चरती परती तोड़ो

पंक्तियों के प्रतीकार्थ लिखिए । 2

खण्ड - द

10. निम्न गद्यांशों में से किसी **एक** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(उत्तर सीमा लगभग 120 शब्द) 7

संध्या समय मुख्य बाजार घूमने गया । बड़ी भीड़-भाड़ थी । विशेषता यह थी कि भीड़ में नंगे बदन लोग बहुत बड़ी संख्या में थे । काला बदन, उस पर शुभ्र यज्ञोपवीत, मोटी तोंद, तहमद बाँधे, सिर से टोपी और पैर से जूता नदारद । साधारण स्निग्ध बातचीत करने में इतनी ज़ोर से बोलते थे जैसे लड़ रहे हों । यह दृश्य मेरे लिए बिलकुल नया था ।

अथवा

दुरंत जीवन-शक्ति है । कठिन उपदेश है । जीना भी एक कला है । लेकिन कला ही नहीं, तपस्या है । जियो तो प्राण ढाल दो ज़िंदगी में, मन ढाल दो जीवन रस के उपकरणों में ! ठीक है । लेकिन क्यों ? क्या जीने के लिए जीना ही बड़ी बात है ? सारा संसार मतलब के लिए ही तो जी रहा है । याज्ञवल्क्य बहुत बड़े ब्रह्मवादी ऋषि थे । उन्होंने अपनी पत्नी को विचित्र भाव से समझाने की कोशिश की कि सब कुछ स्वार्थ के लिए है । पुत्र के लिए पुत्र प्रिय नहीं होता, पत्नी के लिए पत्नी प्रिया नहीं होती — सब अपने मतलब के लिए प्रिय होते हैं — 'आत्मनस्तु कामाय सर्व प्रियं भवति !'

विचित्र नहीं है यह तर्क ? संसार में जहाँ कहीं प्रेम है, सब मतलब के लिए । पश्चिम के हॉब्स और हेल्वेशियस जैसे विचारकों ने भी ऐसी ही बात कही है । सुनके हैरानी होती है । दुनिया में त्याग नहीं है, प्रेम नहीं है, परार्थ नहीं है, परमार्थ नहीं है — है केवल प्रचंड स्वार्थ ।

11. निम्न में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(उत्तर सीमा लगभग 50 शब्द) $2 \times 2 = 4$

(क) संवदिया के बारे में गाँव के लोगों की क्या धारणा थी ?

(ख) 'चार हाथ' लघु कहानी शोषण पर आधारित व्यवस्था का परदाफ़ाश करती है । स्पष्ट कीजिए ।

(ग) विकास का यह 'उजला' पहलू अपने पीछे कितने व्यापक पैमाने पर विनाश का अंधेरा लेकर आया था । 'जहाँ कोई वापसी नहीं' पाठ के आधार पर इस कथन में निहित पीड़ा को स्पष्ट कीजिए ।

12. विद्यापति या भीष्म साहनी का साहित्यिक परिचय लगभग 100 शब्दों में लिखिए । 4

खण्ड - य

13. निम्न प्रश्नों में से किन्हीं **चार** के उत्तर लगभग 50 शब्दों में लिखिए : $2 \times 4 = 8$

(क) ''सच्चे खिलाड़ी कभी रोते नहीं, बाज़ी-पर-बाज़ी हारते हैं, चोट-पर-चोट खाते हैं, धक्के-पर-धक्के सहते हैं पर मैदान में डटे रहते हैं ।''

इस कथन के आधार पर सूरदास की मन:स्थिति में आए बदलाव को स्पष्ट कीजिए ।

(ख) ''अजीब होते हैं ये पहाड़ी लोग !'' यह कथन किसके द्वारा किस प्रसंग में कहा गया है ?

(ग) '' 'बिस्कोहर की माटी' आत्मकथांश में विश्वनाथ त्रिपाठी ने प्रकृति की सतरंगी छटा का मनोरम चित्रण किया है ।'' स्पष्ट करें ।

(घ) 'अपना मालवा खाऊ—उजाड़ू सभ्यता' अध्याय में लेखक ने पर्यावरणीय सरोकारों को आम जनता से जोड़ दिया है । कैसे ? स्पष्ट करें ।

(ङ) 'आशा से ज़्यादा दीर्घजीवी कोई वस्तु नहीं होती ।' ऐसा क्यों कहा गया है ? स्पष्ट करें ।

14. 'आरोहण' कहानी के आधार पर पर्वतीय क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के जीवन का वर्णन कीजिए । (उत्तर सीमा लगभग 120 शब्द) 6